

तकनीकी प्रकाशन संख्या- BAU/KVK/2026-27-01

आलू-मक्का की अंतरवर्ती खेती



प्रकाशक सह संपादक
डॉ. अनिता कुमारी
वरिय वैज्ञानिक एवं प्रधान

लेखक

डॉ० पवन कुमार
वि०व०वि० (कीट विज्ञान)
सुश्री स्वाति कुमारी
वि०व०वि० (शस्य विज्ञान)
डॉ. ममता कुमारी
वि०व०वि० (उद्यान)



कृषि विज्ञान केन्द्र, सबौर, भागलपुर

बिहार कृषि विश्वविद्यालय,

सबौर - 813 210

ईमेल - bhagalpurkvk@gmail.com



नवीनतम कृषि फ़िल्मों को देखने के लिए
हमारा यूट्यूब चैनल को सब्सक्राइब करें।

 /bausabour

विज्ञान हेल्प लाइन 1800 3456 455 (टोल फ्री)

बी.ए.यू. एगो डॉक्टर 700452883

आपका अपना रेडियो स्टेशन

90.8FM
green
THE NEW WAVE

अब मोबाइल पर उपलब्ध



फसल चयन का कारण

आलू एक कम अवधि (90–100 दिन) वाली फसल है जबकि मक्का एक लंबी अवधि (120–150 दिन) की फसल है। दोनों की पोषक तत्वों की आवश्यकता और जड़ प्रणाली अलग-अलग होती है, इसलिए प्रतिस्पर्धा कम होती है।

भूमि की तैयारी

खेत को भली प्रकार जुताई कर समतल करें। आखिरी जुताई के समय 25–30 टन गोबर की सड़ी खाद प्रति हेक्टेयर डालें।

बुआई का समय

रबी मौसम में (अक्टूबर के अंत से नवंबर के मध्य तक) बुआई की जाती है। पहले मक्का की कतारें डालकर बीच की जगह पर आलू की कतारें लगाई जाती हैं।

बुआई की विधि

मक्का की कतारों के बीच 60–70 सेमी दूरी रखें। आलू की कतारें मक्का की दो कतारों के बीच 30–35 सेमी की दूरी पर लगाएँ। आलू के बीच पौधों की दूरी 20–25 सेमी रखें।

बीज दर

मक्का: लगभग 18–20 किग्रा/हेक्टेयर
आलू: 22–25 किग्रा/हेक्टेयर (आकार के अनुसार बीज कंद)।

सिंचाई एवं खरपतवार नियंत्रण

आलू को अधिक नमी की आवश्यकता होती है, इसलिए सिंचाई 7–10 दिन के अंतर पर करें। मक्का के लिए हल्की सिंचाई पर्याप्त रहती है। खरपतवार नियंत्रण के लिए हाथ से निराई या पेंडीमिथलीन 1.0 लि./हेक्टेयर का प्रयोग करें।

उर्वरक प्रबंधन

मक्का: N:P:K = 120:60:40 किग्रा/हेक्टेयर
आलू: N:P:K = 150:100:10 किग्रा/हेक्टेयर
दोनों फसलों का संतुलित अनुपात दें और दो बार टॉप ड्रेसिंग करें।

कीट एवं रोग नियंत्रण

आलू: झुलसा रोग से बचाव हेतु Mancozeb या Metalaxyl आधारित छिड़काव करें।
मक्का: तना छेदक से बचाव हेतु Chlorpyrifos या Neem आधारित स्प्रे करें।

उपज एवं लाभ

आलू की उपज: 200–225
क्विंटल/हेक्टेयर
मक्का की उपज (हरी भुट्टा हेतु): 80–90 क्विंटल/हेक्टेयर
एकल फसल की तुलना में 20–25% अधिक लाभ प्राप्त होता है।

लाभ

भूमि और संसाधनों का बेहतर उपयोग, कीट एवं रोग का दबाव कम, मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है, तथा कुल उत्पादन एवं आय में वृद्धि होती है।

